1857 की क्रांति

REVOLT OF 1857

1857 की क्रांति के कारण / CAUSES OF REVOLT OF 1857

सामाजिक और धार्मिक कारण - ईसाई मिशनरियों द्वारा धार्मिक हस्तक्षेप
Social and Religious Reasons - Religious Intervention by Christian Missionaries

आरंभ में लॉर्ड वैलेजलि (1798–1805) ने ईसाई मिशनरियों को विरोध के भय से कलकत्ता में प्रवेश नहीं दिया। इसका बड़ा उदाहरण था – ईसाई त्रिमूर्ति – जोशुआ मार्शमैन, विलियम कैरी तथा विलियम वार्ड को कलकत्ता में प्रवेश न देना और उनका सीरामपुर में शरण लेना।

Initially, Lord Wellesley (1798–1805) did not allow Christian missionaries to enter Calcutta. A great example of this was - Christian Trinity - Joshua Marshman, William Cary and William Ward not to enter Calcutta and take refuge in Serampore.

wifistudy

1857 की क्रांति के कारण / CAUSES OF REVOLT OF 1857

सामाजिक और धार्मिक कारण - ईसाई मिशनरियों द्वारा धार्मिक हस्तक्षेप
Social and Religious Reasons - Religious Intervention by Christian Missionaries

किंतु 1813 के अधिनियम द्वारा मिशनरी गतिविधियों पर लगा प्रतिबंध हटा लिया गया तथा ब्रिटेन और अमेरिका से आने वाले ईसाईयों को मिशनरी कार्यों के लिए भारत में निवास का अधिकार मिल गया। उन्होनें यहाँ कथित रूप से 'भारतीय समाज को कुरीतियों से बचाने के लिए' ईसाई मत की स्थापना का प्रयास किया।

But the ban on missionary activities was lifted by the Act of 1813 and Christians from Britain and America got the right of residence in India for missionary work. They allegedly tried to establish the Christian faith 'to save Indian society from the evils'.

wifistudy

1857 की क्रांति के कारण / CAUSES OF REVOLT OF 1857

सामाजिक और धार्मिक कारण - ईसाई मिशनरियों द्वारा धार्मिक हस्तक्षेप
Social and Religious Reasons - Religious Intervention by Christian Missionaries

यह भारतीयों (हिंदु–मुस्लिम दोनों) की धार्मिक व लौकिक मान्यताओं में सीधा हस्तक्षेप था। आर.सी.मजूमदार के अनुसार 1850 के दशक तक तो सिपाहियों को लगने लगा था कि सरकार पूरे भारतवर्ष को ईसाई धर्म में परिपर्तित करना चाहती है।

It was a direct intervention in the religious and temporal beliefs of Indians (both Hindus and Muslims). According to RC Majumdar, by the 1850s, the soldiers had started feeling that the government wanted to convert the whole of India to Christianity.

wifistudy

1857 की क्रांति के कारण / CAUSES OF REVOLT OF 1857

ईस्ट इंडिया कंपनी की धार्मिक व सामाजिक हस्तक्षेप की नीतियां - सती प्रथा का अंत (1829)

Religious and Social Intervention Policies of the East India Company - The End of Sati (1829)

हालांकि यह प्रथम बार नहीं था कि सती (कु)प्रथा को प्रतिबंधित करने का प्रयास किया गया। मध्यकाल में मुहम्मद–बिन–तुगलक और अकबर ने इसे रोकने के प्रयास किए थे। पुर्तगालियों ने 1515 में गोवा में इस पर प्रतिबंध लगाया था। कंपनी के अधीन इसे 4 दिसंबर 1829 को लॉर्ड विलियम कैवेंडिश बैंटिंक द्वारा बंगाल में प्रतिबंधित (बंगाल सती रेगुलेशन एक्ट–XVII) किया गया था।

Though it wasn't the first attempt to ban the sati. In the medieval period, Muhammad-bin-Tughlaq and Akbar tried to stop it. The Portuguese banned it in Goa in 1515. Under the company, it was banned in Bengal (Bengal Sati Regulation Act - XVII) on 4 December 1829 by Lord William Cavendish Bentinck.

wifistudy

1857 की क्रांति के कारण / CAUSES OF REVOLT OF 1857

ईस्ट इंडिया कंपनी की धार्मिक व सामाजिक हस्तक्षेप की नीतियां - सती प्रथा का अंत (1829)

Religious and Social Intervention Policies of the East India Company - The End of Sati (1829)

1830 में इसे बंबई और मद्रास में लागू किया गया। इस संबंध में राजा राममोहन राय के प्रयास उल्लेखनीय है जिन्होनें संवाद कौमूदी में लेखों से शुरूआत करके 1832 में प्रिवि काउंसिल से इसे मान्यता मिलने तक संघर्ष का परिचय दिया।

In 1830 it was implemented in Bombay and Madras. The efforts of Raja Rammohan Roy in this regard are notable, starting with the writings in Samvad Kaumudi, he struggled till it was recognized by the Privy Council in 1832.

wifistudy

1857 की क्रांति के कारण / CAUSES OF REVOLT OF 1857

ईस्ट इंडिया कंपनी की धार्मिक व सामाजिक हस्तक्षेप की नीतियां - सती प्रथा का अंत (1829)

Religious and Social Intervention Policies of the East India Company - The End of Sati (1829)

उल्लेखनीय है कि सती प्रथा बंगाल में विशेष रूप से प्रचलित थी जिसका कारण था 'विधि की दयाभाग व्यवस्था' (सन् 1100 ई. से प्रारंभ) जिसमें विधवा को पति की संपत्ति पर उत्तराधिकार प्रदान किया गया था। इस कारण से विधवाओं को सती हेतु प्रेरित किया जाने लगा ताकि उनकी संपत्ति अन्य संबंधियों को मिल सके।

It is noteworthy that the practice of sati was particularly prevalent in Bengal due to the 'Dayabhaga system of law' (commencing from 1100 AD) in which the widow was granted succession over the husband's property. For this reason widows were motivated to Sati so that their relatives could get their property.

wifistudy

1857 की क्रांति के कारण / CAUSES OF REVOLT OF 1857

ईस्ट इंडिया कंपनी की धार्मिक व सामाजिक हस्तक्षेप की नीतियां - सती प्रथा का अंत (1829)

Religious and Social Intervention Policies of the East India Company - The End of Sati (1829)

ज्ञात रहे कि सती के समर्थन में और अधिनियम के विरोध में राजा राधाकांत देव ने 1830 ई. में 'धर्म सभा' नामक संस्था की स्थापना की थी। राधाकांत देव का यह विरोध केवल सती के संबंध में था। उन्होनें स्त्री शिक्षा का समर्थन किया था।

It is known that in 1830 AD, Raja Radhakant Dev established an institution called 'Dharma Sabha' in support of Sati and against the Act. This opposition of Radhakanta Dev was only in relation to Sati. He supported women's education.

wifistudy

1857 की क्रांति के कारण / CAUSES OF REVOLT OF 1857

ईस्ट इंडिया कंपनी की धार्मिक व सामाजिक हस्तक्षेप की नीतियां
Religious and Social Intervention Policies of the East India Company

धार्मिक अक्षमता अधिनियम (द रिलिजियस डिसेबिलिटीज़ एक्ट – 1850): इसे इसे बंगाल रेगुलेशन एक्ट–XXI के नाम से पारित किया गया था। इसमें धर्म परिवर्तन करने वाले व्यक्ति के संपत्ति अधिकारों को सुरक्षित किया गया था। अन्यथा भारतीय रीतिनुसार धर्म या जाति बाहर होने पर व्यक्ति अपने पैतृक संपत्ति अधिकार खो बैठता था।

The Religious Disabilities Act - 1850: It was passed under the name of Bengal Regulation Act-XXI. It protected the property rights of a proselyte. Otherwise, the person would have lost his or her ancestral property rights when he changed his religion or thrown out of caste.

wifistudy

1857 की क्रांति के कारण / CAUSES OF REVOLT OF 1857

ईस्ट इंडिया कंपनी की धार्मिक व सामाजिक हस्तक्षेप की नीतियां
Religious and Social Intervention Policies of the East India Company

चार्ल्स वुड्स डिस्पैच (1854): इसे अंग्रेजी शिक्षा का मैग्नाकार्टा कहा जाता है। इसके तहत लंदन विश्वविद्यालय को मॉडल बनाकर 1857 ई. में कलकत्ता, बंबई व मद्रास में विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई। इसने भारत के परंपरागत शैक्षिक ढांचे में आमलचूल परिवर्तन लाने का प्रयास किया।

Charles Woods Dispatch (1854): This is called the Magnacarta of English Education. Under this, universities were established in Calcutta, Bombay and Madras in 1857 AD by making London University a model. It attempted to bring about a paradigm shift in the traditional educational structure of India.

wifistudy

1857 की क्रांति के कारण / CAUSES OF REVOLT OF 1857

ईस्ट इंडिया कंपनी की धार्मिक व सामाजिक हस्तक्षेप की नीतियां
Religious and Social Intervention Policies of the East India Company

हिंदु विधवा पुनर्विवाह अधिनियम (1856): इसे बंगाल रेगुलेशन एक्ट–XV के नाम से 26 जुलाई 1856 को पारित किया गया था। इस हेतु ईश्वर चंद्र 'विद्यासागर' के प्रयास उल्लेखनीय है। भारतीय समाज के रूढ़ीवादी वर्गों ने इसे भी परंपरागत सामाजिक–धार्मिक व्यवस्था में हस्तक्षेप माना।

Hindu Widow Remarriage Act (1856): It was passed on 26 July 1856 under the name of Bengal Regulation Act-XV. For this, the efforts of Ishwar Chandra 'Vidyasagar' were remarkable. The conservative sections of Indian society also considered it an interference in the traditional socio-religious system.

wifistudy

ईस्ट इंडिया कंपनी की आर्थिक हस्तक्षेप की नीतियां

ECONOMIC INTERVENTION POLICIES OF EAST INDIA COMPANY

अंग्रेजों ने भारत के परंपरागत आर्थिक तानेबाने को पूरी तरह खंडित कर दिया। भू–लगान वसूली की अव्यवस्थित नीतियों और भारी करों ने भारतीयों की कमर तोड़ दी। देशी रियासतों को अधीनस्थ बनाकर उन्होनें एक बड़े कलाकार वर्ग को 'संरक्षण' से बाहर कर दिया।

The British completely fragmented the traditional economic fabric of India. The chaotic policies of land realization and heavy taxes broke the back of Indians. By subordinating the princely states, they excluded a large artist class from 'patronage'.

1857 की क्रांति के कारण / CAUSES OF REVOLT OF 1857

ईस्ट इंडिया कंपनी की आर्थिक हस्तक्षेप की नीतियां
ECONOMIC INTERVENTION POLICIES OF EAST INDIA COMPANY

अंग्रेजों ने भारतीय हथकरघा और कुटिर उद्योग को हतोत्साहित किया तथा ब्रिटिश वस्तुओं को भारी मात्रा में खपाया। उद्योगों के विस्तार के अभाव में एक बड़ा शहरी व अद्र्ध–शहरी वर्ग कृषि की ओर विस्थापित हो गया जिससे स्थितियां और भी बुरी हो गई।

The British discouraged the Indian handloom and cottage industries and forced open the large Indian market to British goods. In the absence of expansion of industries, a large urban and semi-urban class got displaced towards agriculture, which made the situation worse.

1857 की क्रांति के कारण / CAUSES OF REVOLT OF 1857

ईस्ट इंडिया कंपनी की आर्थिक हस्तक्षेप की नीतियां
ECONOMIC INTERVENTION POLICIES OF EAST INDIA COMPANY

कार्ल मार्क्स ने कहा था, 'यह ब्रिटिश घुसपैठिया था जिसने भारतीय हथकरघे को तोड़ दिया और कताई—पहिए को नष्ट कर दिया।' 1857 के दौरान अवध, तुफ़ान का सबसे बड़ा केंद्र रहा, जहां के 21000 से ज्यादा तालुकेदारों ने सरकार से कहा कि 'वे दूसरे काम करने में असमर्थ है, भीख मांगने में शर्मिंदा महसूस करते है तथा निंदा के शिकार नहीं बनना चाहते।' Karl Marx said, "It was the British intruder who broke the Indian handloom and destroyed the spinning wheel." During 1857, Awadh was the center of the storm, where more than 21000 talukdars told the government that 'they were unable to work, ashamed to beg and condemned to penury'.

1857 की क्रांति के कारण / CAUSES OF REVOLT OF 1857

ईस्ट इंडिया कंपनी की राजनीतिक हस्तक्षेप की नीतियां
POLITICAL INTERVENTION POLICIES OF EAST INDIA COMPANY

अतिशयोक्तिपूर्ण भातिकतावादी नीतियों और देशी रियासतों से उनकी दगाबाजियों ने भारतीय शासकों को आशंकित कर दिया। इस संबंध में 'प्रभावी नियंत्रण की नीति', 'सहायक संधि की नीति', 'व्यपगत के सिद्धांत' और 'रिंगफेंस नीति' आदि उल्लेखनीय है। डलहौजी द्वारा 1849 में यह घोषणा कि 'बहादुरशाह के उत्तराधिकारी को लाल किला छोड़ना होगा' – ने भारतीयों को और क्रुद्ध कर दिया।

Their exaggerated hedonistic policies and betrayal to indigenous princely states made the Indian rulers apprehensive. 'Effective Control Policy', 'Subsidiary Alliance policy', 'Doctrine of Lapse' and 'Ring-Fence Policy' are notable in this regard. Dalhousie's declaration in 1849 that 'Bahadur Shah's successor would have to leave the Red Fort' - further enraged the Indians.

wifistudy

1857 की क्रांति के कारण / CAUSES OF REVOLT OF 1857

ईस्ट इंडिया कंपनी की राजनीतिक हस्तक्षेप की नीतियां
POLITICAL INTERVENTION POLICIES OF EAST INDIA COMPANY

सहायक संधि की नीति: यह लॉर्ड वैलेजलि (1798–1805) द्वारा प्रारंभ 'गैर–हस्तक्षेप' (नॉन इंटवेंशन) की नीति थी। इसके तहत भारतीय राज्य स्वतंत्र सेना नहीं रख सकते थे अपितु उन्हें सुरक्षा हेतु उपलब्ध करवाई गई अंग्रेजी सेना का खर्च उठाना पड़ता था। राज्य जिन्होनें अंग्रेजों के साथ संधि हस्ताक्षरित की – 1798:हैदराबाद, 1799:मैसूर, 1801:अवध, 1802:पेशवा, 1803:भोंसले और सिंधिया, 1818:उदयपुर, जयपुर और जोधपुर। **The policy of Subsidiary Alliance:** This was the policy of 'non-intervention' (non-intervention) initiated by Lord Wellesley (1798–1805). Under this, the Indian states could not maintain an independent army but had to bear the cost of the English army provided for their security. States that signed treaties with the British - 1798: Hyderabad, 1799: Mysore, 1801: Oudh, 1802: Peshwa, 1803: Bhonsle and Scindia, 1818: Udaipur, Jaipur and Jodhpur.

1857 की क्रांति के कारण / CAUSES OF REVOLT OF 1857

ईस्ट इंडिया कंपनी की राजनीतिक हस्तक्षेप की नीतियां
POLITICAL INTERVENTION POLICIES OF EAST INDIA COMPANY

व्यपगत का सिद्धांत: यह लॉर्ड डलहौजी (1848–1856) द्वारा आरंभ 'हड़प' की नीति थी। आधार यह था कि यदि कोई शासक बिना पुरूष उत्तराधिकारी के मृत्यु को प्राप्त होता है तो उसका राज्य अंग्रेजों को अधीन हो जाएगा। 'डॉक्ट्रीन ऑफ़ लैप्स' के तहत अधिगृहित राज्य (कालक्रमानुसार): 1848:सतारा, 1849:जैतपुर (उ.प्र.) और संभलपुर (उड़ीसा), 1850:भगत, 1852:उदयपुर (छत्तीसगढ़), 1853:झांसी, 1854:नागपुर, 1855: तंजौर और अर्काट तथा 1856:अवध।

Doctrine of Lapse: This was the policy of 'usurp' initiated by Lord Dalhousie (1848–1856). The premise was that if a ruler dies without a male heir, then his kingdom would be subjugated to the British. States acquired under 'Doctrine of Lapse' (chronological order): 1848: Satara, 1849: Jaitpur (U.P.) and Sambalpur (Orissa), 1850: Bhagat, 1852: Udaipur (Chhattisgarh), 1853: Jhansi, 1854: Nagpur , 1855: Tanjore and Arcot and 1856: Awadh.

winstudy

1857 की क्रांति का घटनाक्रम/EVENTS OF THE REVOLT OF 1857

क्रांति की योजना का निर्माण/PLANNING FOR THE REVOLT

कुछ इतिहासकारों का मानना है कि 1857 की क्रांति की योजना अजीमुल्ला ने नाना साहब के साथ मिलकर 'बिठूर' में बनाई गई थी और क्रांति के लिए 31 मई, 1857 का दिन चुना गया था। क्रांति के प्रतीक के रूप में 'रोटी' और 'कमल' को चुना गया। कमल द्वारा सैन्य टुकड़ियों तक और रोटी द्वारा गाँवो तक क्रांति का संदेश पहुंचाया गया।

Some historians believe that the revolution of 1857 was planned by Azimullah in collaboration with Nana Saheb at 'Bitur' and the day of 31 May 1857 was chosen for the revolution. 'Roti' and 'Lotus' were chosen as symbols of the revolution. The message of revolution was conveyed by Kamal to the troops and by roti to the villages.

wifistudy

1857 की क्रांति का घटनाक्रम/EVENTS OF THE REVOLT OF 1857

क्रांति की योजना का निर्माण/PLANNING FOR THE REVOLT

इस संबंध में मार्च 1857 में गिल्बर्ट हैडौ नामक एक सर्जन ने लिखा था – "वर्तमान में पूरे भारत में एक रहस्यमयी घटना चल रही है। भारतीय कागज़ात इन वाकयातों से भरे हुए हैं।" हैडौ ने इस संबंध में 'चपाती आंदोलन' शब्द का प्रयोग किया है। हालांकि इसके उद्देश्य का खुलासा सर्वप्रथम मथुरा के मजिस्ट्रेट 'मार्क थॉर्नहिल' द्वारा किया गया था।

In this regard, in March 1857, a surgeon named Gilbert Haddou wrote - "At present a mysterious incident is going on all over India. Indian papers are replete with these incidents. "Haddou has used the term' chapati movement 'in this regard. However, its purpose was first revealed by the magistrate of Mathura 'Mark Thornhill'.

wifistudy

1857 की क्रांति का घटनाक्रम/EVENTS OF THE REVOLT OF 1857

क्रांति की योजना का निर्माण/PLANNING FOR THE REVOLT

1857 के विद्रोह के दुर्लभ दस्तावेजों से पता चलता है कि 5 मार्च 1857 तक, चपाति आंदोलन दूर-दूर तक अवध और रोहिलखंड से दिल्ली तक पहुँच चुका था। हाल के अध्ययनों से यह सिद्धांत भी प्रस्तुत किया गया है कि चपातियों का प्रचलन शायद 'हैजा' से पीड़ित लोगों तक भोजन पहुंचाने का एक प्रयास रहा हो।

Rare documents of the Revolt of 1857 show that by 5 March 1857, the 'chapatis' movement had reached from Awadh and Rohilkhand to Delhi. Recent studies have also presented the theory that the practice of chapatis may have been an attempt to provide food to people suffering from cholera.

wifistudy

1857 की क्रांति का घटनाक्रम/EVENTS OF THE REVOLT OF 1857

क्रांति की योजना का निर्माण/PLANNING FOR THE REVOLT

'डेली लाइफ ड्यूरिंग द इंडियन म्युटिनी: पर्सनल एक्सपेरिएंसेस ऑफ़ 1857' (1898) में जे.डब्ल्यू. शेरेर ने लिखा है, “यदि 'चपाती आंदोलन' का उद्देश्य अंग्रेजी हुकुमत में बेचैनी उत्पन्न करना था तो कहना पड़ेगा वे इसमें सफल हुए।”

In 'Daily Life During the Indian Mutiny: Personal Experiences of 1857' (1898), J.W. Sherer has written, "If the purpose of the 'chapati movement' was to create uneasiness in English rule, then we have to say that they succeeded in it."

1857 की क्रांति का घटनाक्रम/EVENTS OF THE REVOLT OF 1857

31 मई 1857 से पूर्व ही क्रांति का आगाज़/REVOLT STARTED BEFORE 31 MAY 1857

मंगल पाण्डेय ईस्ट इंडिया कंपनी की बैरकपुर छावनी का 34वीं बंगाल इंफेन्ट्री का सिपाही था। चर्बीयुक्त कारतूस के प्रयोग से इनकार करते हुए मंगल पाण्डेय ने लेफ़्टिनेंट बाग और लेफ़्टिनेंट जनरल ह्यूसन की हत्या कर दी।

Mangal Pandey was a soldier of the 34th Bengal Infantry of Barrackpore Cantonment of East India Company. Mangal Pandey murdered Lieutenant Bagh and Lieutenant General Hughson while denying the use of the cartridges.

wifistudy

1857 की क्रांति का घटनाक्रम/EVENTS OF THE REVOLT OF 1857

31 मई 1857 से पूर्व ही क्रांति का आगाज़/REVOLT STARTED BEFORE 31 MAY 1857

यह घटना 29 मार्च 1857 को घटित हुई। 6 अप्रैल 1857 को मंगल पाण्डेय का कोर्ट मार्शल कर दिया गया और 8 अप्रैल को उन्हें फ़ांसी दे दी गयी। इसी के अनुकरण में 10 मई 1857 को मेरठ छावनी की 20वीं बंगाल एन.आई. (नेटिव इंफेंट्री) और तीसरी एल.सी. (लाइट कैवलरी – घुड़सेना) ने विद्रोह का बिगुल बजा दिया।

This incident took place on 29 March 1857. Mangal Pandey was court martialed on 6 April 1857 and he was hanged on 8 April. Following this, on 20 May 1857, the 20th Bengal NI of Meerut Cantonment (Native Infantry) and 3rd LC (Light Cavalry - Horsemen) rebelled against the company.

wifistudy

1857 की क्रांति का तत्कालिक कारण - एनफ़िल्ड पी53

लॉर्ड कैनिंग (1856-1862) के समय 1856 में 'ब्राउन बेस राइफल' के स्थान पर इंग्लैंड में निर्मित, 'एनफ़िल्ड पी—53' नामक नई बंदूक ब्रिटिश सेना के लिए उपयोग के लिए भारत भेजी गई। इसमें ऐसे कारतूसों (प्रिकशन कैप) का प्रयोग किया जाता था जिन्हें राइफल में लोड करने से पहले दाँतों से काटना पड़ता था।

Built in England in 1856 at the time of Lord Canning (1856–1862) in place of the 'Brown Base Rifle', a new gun called 'Enfield P-53' was sent to India for use for the British Army. It used cartridges that had to be cut from the teeth before loading them into the rifle.

1857 की क्रांति का तत्कालिक कारण - एनफ़िल्ड पी53

इसमें ग्रिसिंग के लिए गाय और सुअर की चर्बी का प्रयोग किया गया था और इसने हिंदू और मुस्लिम दोनों सिपाहियों को नाराज कर दिया। उनका मानना था कि अंग्रेज जानबूझकर उनके धर्म को नष्ट करने की कोशिश कर रहे है और अब विद्रोह करने का समय आ गया है। इस समय इंग्लैंड में लॉर्ड पॉमर्स्टन की सरकार थी। उल्लेखनीय है कि एनफिल्ड राइफल को वर्ष 1867 तक प्रयोग में लाया गया।

It used cow and pig fat for greasing and this angered both Hindu and Muslim soldiers. They believed that the British were deliberately trying to destroy their religion and now the time had come to revolt. At this time Lord Palmerston was in government in England. It is noteworthy that the Enfield rifle was used till the year 1867.

wifistudy

क्रांतिकारियों का दिल्ली आगमन और क्रांति की प्रगति

मेरठ में क्रांति के अगले ही दिन, 11 मई 1857 को 'तीसरी घुड़सेना (तीसरी एल.सी.)' के सैनिक लगभग 65 किमी दूर दिल्ली पहुंच गई और बहादुर शाह 'ज़फ़र' को पुन: भारत का सम्राट और क्रांति का नेता घोषित कर दिया। On the very next day of the revolution in Meerut, on 11 May 1857, the soldiers of the 'Third Cavalry (Third LC)' reached Delhi about 65 km away and declared Bahadur Shah 'Zafar' the Emperor of India and the leader of the revolution.

CAPTAIN HODSON ARRESTING THE KING OF DELHI, 1857.

क्रांतिकारियों का दिल्ली आगमन और क्रांति की प्रगति

वृद्ध बहादुर शाह की ओर से नेतृत्व की वास्तविक जिम्मेदारी 'बख्त ख़ाँ' को सौंपी गई थी। विद्रोही दिल्ली पर लंबे समय तक कब्जा नहीं रख सके और 20 सितंबर 1857 को बहादुरशाह ने 'हुमायूं के मकबरे' में डबल्यू.एस.आर. हडसन के समक्ष समर्पण कर दिया।

The real responsibility of leadership was entrusted to 'Bakht Khan' on behalf of old Bahadur Shah. The rebels could not keep Delhi occupied for a long time and on 20 September 1857 Bahadur Shah in surrendered to WSR Hudson in Humayun's Tomb.

wifistudy

Indian States during Revolt of 1857

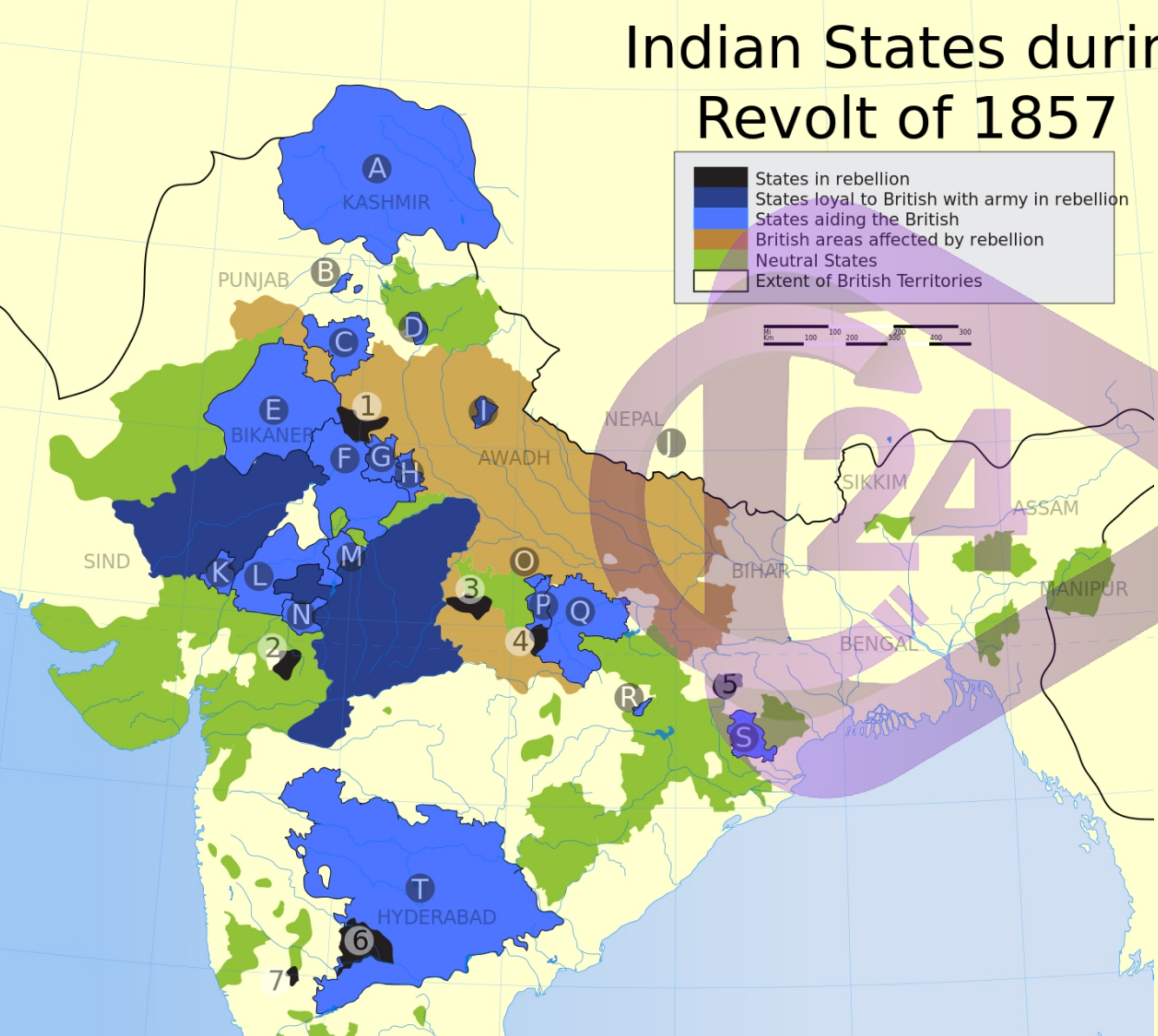

दिल्ली – जनरल बख्त ख़ाँ

Delhi - General Bakht Khan

कानपुर – नाना साहेब

Kanpur - Nana Saheb

लखनऊ – हजरत महल

Lucknow - Hazrat Mahal

फैज़ाबाद – मौलवी अहमदुल्ला

Faizabad - Maulvi Ahmadullah

बिहार – कुंवरसिंह

Bihar - Kunwar Singh

बरेली – खान बहादुर

Bareilly - Khan Bahadur

झांसी – रानी लक्ष्मी बाई

Jhansi - Rani Laxmi Bai

बागपत – शाहमल

Baghpat - Shahmal

भारत के अन्य क्षेत्रों में क्रांति का विस्तार - लखनऊ

लखनऊ में क्रांति का प्रारंभ जून, 1857 को हुआ। **बेगम हज़रत महल**, जो 'अवध की बेगम' के नाम से भी प्रसिद्ध थीं, अवध के नवाब वाजिद अली शाह की दूसरी पत्नी थीं। अंग्रेज़ों द्वारा वाजिद अली शाह के कलकत्ता निर्वासन के बाद उन्होंने लखनऊ पर क़ब्ज़ा कर लिया और अपनी अवध रियासत की हकूमत को बरक़रार रखा।

The revolution began in June 1857 in Lucknow. Begum Hazrat Mahal, also known as 'Begum of Awadh', was the second wife of Wajid Ali Shah, the Nawab of Awadh. After the deportation of Wajid Ali Shah to Calcutta by the British, he annexed Lucknow and maintained the rule of the princely state of Awadh.

wifistudy

1857 की क्रांति का घटनाक्रम

भारत के अन्य क्षेत्रों में क्रांति का विस्तार - लखनऊ

अंग्रेज़ों के क़ब्ज़े से अपनी रियासत बचाने के लिए उन्होंने अपने बेटे नवाबज़ादे बिरजिस क़द्र को अवध के वली (शासक) नियुक्त करने की कोशिश की थी; मगर उनका शासन जल्द ही ख़त्म होने की वजह से उनकी ये कोशिश असफल रह गई। दिसंबर 1857 में जनरल हैवलॉक द्वारा क्रांति के दमन के बाद उन्हें नेपाल में शरण मिली जहाँ उनकी मृत्यु 1879 में हुई थी।

To save his princely state from the occupation of the British, he tried to appoint his son Nawabzade Birjis Kadra as the Vali (ruler) of Awadh; But his efforts failed due to the end of his rule soon. After the suppression of the revolution by General Havelock in December 1857, he took refuge in Nepal where he died in 1879.

भारत के अन्य क्षेत्रों में क्रांति का विस्तार - कानपुर व बिठूर

लॉर्ड डलहौज़ी ने पेशवा बाजीराव द्वितीय की मृत्यु के बाद नाना साहब को 8 लाख की पेन्शन से वंचित कर दिया था। नाना साहब ने इस अन्याय की फरियाद को अज़ीमुल्लाह ख़ाँ के माध्यम से इंग्लैण्ड की सरकार तक पहुँचाया था, लेकिन प्रयास निस्फल रहा। अब दोनों ही अंग्रेज़ी राज्य के विरोधी हो गये और भारत से अंग्रेज़ी राज्य को उखाड़ फेंकने के प्रयास में लग गये।

Lord Dalhousie had denied pension of 8 lakhs to Nana Saheb after the death of Peshwa Bajirao II. Nana Saheb had conveyed the complaint of this injustice to the Government of England through Azimullah Khan, but the effort was unsuccessful. Now both of them became adversaries of the English state and started trying to overthrow the English state from India.

wifistudy

भारत के अन्य क्षेत्रों में क्रांति का विस्तार - कानपुर व बिठूर

जून, 1857 को कानपुर में विद्रोह आरंभ हुआ। इसका नेतृत्व नाना साहब ने किया तथा तात्या टोपे और अज़ीमुल्लाह ख़ाँ इनके सहायक थे। नाना साहब पेशवा बाजीराव के दत्तक पुत्र थे उनका वास्तविक नाम धुंधूपंत था।

The rebellion began in Kanpur on June 1857. It was led by Nana Saheb and Tatya Tope and Azimullah Khan were his assistants. Nana Saheb was the adopted son of Peshwa Bajirao, his real name was Dhundhupant.

wifistudy

भारत के अन्य क्षेत्रों में क्रांति का विस्तार - कानपुर व बिठूर

जनरल हैवलॉक ने 16 जुलाई 1857 को अहिरवा गांव में नाना साहब की सेना पर हमला किया और कानपुर पुनः प्राप्त कर लिया। 1859 में नाना साहब नेपाल कूच कर गए।

General Havelock attacked Nana Saheb's army at Ahirwa village on 16 July 1857 and recaptured Kanpur. Nana Saheb fled to Nepal in 1859.

wifistudy

भारत के अन्य क्षेत्रों में क्रांति का विस्तार - कानपुर व बिठूर

तात्या टोपे का वास्तविक नाम रामचंद्र पांडूरंग येवलकर था। नाना साहब के बाद भी इन्होने अंग्रेजों के विरुद्ध 1857 के स्वतंत्रता आन्दोलन को दीर्घकाल तक जारी रखा।

Tatya Tope's real name was Ramchandra Pandurang Yevalkar. Even after fall of Nana Saheb, he continued the freedom movement of 1857 against the British for a long time.

भारत के अन्य क्षेत्रों में क्रांति का विस्तार - कानपुर व बिठूर

कानपुर से निकलने के बाद तात्या ने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के साथ मिलकर अंग्रेजों से मुकाबला किया था। नरवर के राजा मानसिंह द्वारा दी जानकारी के आधार पर तात्या को पकड़ कर उन पर मुकदमा चलाया गया और 18 अप्रैल 1859 को उन्हें सूली पर चढ़ा दिया गया था।

After leaving Kanpur, Tatya fought the British along with Rani Laxmibai of Jhansi. On the basis of information given by King Mansingh of Narwar, Tatya was captured and put on trial and he was crucified on 18 April 1859.

1857 की क्रांति का घटनाक्रम

भारत के अन्य क्षेत्रों में क्रांति का विस्तार - झांसी

मराठा शासित बुन्देलखंड के गढ़ माने वाले झांसी में क्रांति का आगाज़ रानी लक्ष्मीबाई ने किया। लक्ष्मीबाई का मूल नाम मणिकर्णिका था। राजा गंगाधर राव नेवालकर के साथ इनका विवाह हुआ था।

Rani Laxmibai started the revolution in Jhansi, the stronghold of Maratha-ruled Bundelkhand. Lakshmibai's original name was Manikarnika. He was married to King Gangadhar Rao Navalkar.

wifistudy

भारत के अन्य क्षेत्रों में क्रांति का विस्तार - झांसी

उनके स्वयं के पुत्र की अल्पायु में मृत्यु हो गई थी अत: एक बालक गोद लिया जिसका नाम नाम दामोदर राव रखा गया। पुत्र गोद लेने के बाद 21 नवम्बर 1853 को राजा गंगाधर राव की मृत्यु हो गयी। शिघ्र ही लॉर्ड डलहौजी की हड़प नीति अथवा व्यपगत के सिद्धान्त के तहत झांसी को अंग्रेजों के अधीन घोषित कर लिया गया।

His own son died at a young age, so adopted a child named Damodar Rao. Raja Gangadhar Rao died on 21 November 1853 after adoption. Jhansi was declared under the British under Lord Dalhousie's usurpation policy or Doctrine of Lapse.

भारत के अन्य क्षेत्रों में क्रांति का विस्तार - झांसी

रानी लक्ष्मीबाई ने 1857 की क्रांति में कूदना निश्चित कर लिया। झांसी की सुरक्षा सुदृढ़ करते हुए एक स्वयंसेवक सेना का गठन प्रारम्भ किया गया। इस सेना में महिलाओं की भर्ती की गयी और उन्हें युद्ध का प्रशिक्षण दिया गया। झलकारी बाई नामक लक्ष्मीबाई की हमशक्ल को सेना में प्रमुख स्थान दिया गया था।

Rani Lakshmibai decided to jump into the revolution of 1857. A volunteer army was formed, strengthening the security of Jhansi. Women were recruited in this army and trained in war. Laxmibai's lookalike named Jhalkari Bai was given a prominent position in the army.

wifistudy

1857 की क्रांति का घटनाक्रम

भारत के अन्य क्षेत्रों में क्रांति का विस्तार - झांसी

1858 के जनवरी माह में ब्रितानी सेना ने झाँसी की ओर बढ़ना शुरू कर दिया और मार्च के महीने में शहर को घेर लिया। दो हफ़्तों की लड़ाई के बाद ब्रितानी सेना ने शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया। परन्तु रानी दामोदर राव के साथ अंग्रेज़ों से बच कर भाग निकलने में सफल हो गयी। रानी झाँसी से भाग कर कालपी पहुँची और तात्या टोपे से मिली।

In January of 1858, the British army started marching towards Jhansi and surrounded the city in the month of March. After two weeks of fighting, the British army captured the city. But the queen succeeded in escaping from the British with Damodar Rao. The queen escaped from Jhansi and reached Kalpi and met Tatya Tope.

भारत के अन्य क्षेत्रों में क्रांति का विस्तार - झांसी

तात्या टोपे और रानी की संयुक्त सेनाओं ने ग्वालियर के विद्रोही सैनिकों की मदद से ग्वालियर के एक क़िले पर क़ब्ज़ा कर लिया। बाजीराव प्रथम के वंशज अली बहादुर द्वितीय ने भी रानी लक्ष्मीबाई का साथ दिया।

The combined forces of Tatya Tope and Rani captured a fort in Gwalior with the help of rebel soldiers of Gwalior. Ali Bahadur II, a descendant of Bajirao I, also supported Rani Laxmibai.

भारत के अन्य क्षेत्रों में क्रांति का विस्तार - झांसी

18 जून 1858 को ग्वालियर के पास कोटा की सराय में ब्रितानी सेना से लड़ते-लड़ते रानी लक्ष्मीबाई की मृत्यु हो गई। लड़ाई की रिपोर्ट में ब्रितानी जनरल ह्यूरोज़ ने टिप्पणी की कि रानी लक्ष्मीबाई अपनी सुन्दरता, चालाकी और दृढ़ता के लिये उल्लेखनीय तो थी ही, विद्रोही नेताओं में सबसे अधिक ख़तरनाक भी थी।

On 18 June 1858, Rani Laxmibai died while fighting the British army near Gwalior. In the report of the battle, British General Hurroz remarked that while Rani Lakshmibai was remarkable for her beauty, ingenuity and tenacity, it was also the most dangerous of the rebel leaders.

wifistudy

1857 की क्रांति का घटनाक्रम

भारत के अन्य क्षेत्रों में क्रांति का विस्तार - झांसी

"बुन्देलों हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वो तो झांसी वाली रानी थी।" सुभद्राकुमारी चौहान

1857 की क्रांति के नायक

बैरकपुर Barrackpore	मंगल पांडे – 34वीं बंगाल नेटिव इंफेंट्री, फ़ांसी: 8 अप्रेल 1857 Mangal Pandey - 34th Bengal Native Infantry, Hanged: 8 April 1857
दिल्ली Delhi	बहादुर शाह ज़फ़र, जनरल बख़्त ख़ाँ, हाकिम अहसानुल्लाह Bahadur Shah Zafar, General Bakht Khan, Hakim Ahsanullah
लखनऊ Lucknow	बेगम हज़रत महल, बिरजिस कादिर, अहमदुल्लाह (अवध के पूर्व नवाब के सलाहकार)/Begum Hazrat Mahal, Birjis Qadir, Ahmadullah (Advisor to the former Nawab of Awadh)

1857 की क्रांति के नायक

कानपुर Kanpur	नाना साहब, राव साहब (भतीजे), तांतिया टोपे, अजिमुल्ला ख़ाँ (नाना साहब के सलाहकार)/Nana Saheb, Rao Saheb (Nephew), Tantia Tope, Ajimullah Khan (Advisor to Nana Saheb)
झांसी Jhansi	रानी लक्ष्मीबाई Rani Laxmibai
जगदीशपुर Jagdishpur	कुंवरसिंह और अमरसिंह Kunwar Singh and Amar Singh

1857 की क्रांति के नायक

इलाहाबाद और बनारस Allahabad and Banaras	मौलवी लियाकत अली Malawi Liaquat Ali
फैजाबाद Faizabad	मौलवी अहमदुल्लाह - अंग्रेजों के विरुद्ध जिहाद कि घोषणा Maulvi Ahmadullah - Declaration of Jihad against the British
फर्रुखाबाद Farrukhabad	तफजुल हसन खाँ Tafjul Hasan Khan

wifistudy

1857 की क्रांति के नायक

बिजनौर Bijnaur	मुहम्मद खाँ Muhammad Khan
मुरादाबाद Muradabad	अब्दुल अली खाँ Abdull Ali Khan
बरेली Brailey	खान बहादुर खान Khan Bahadur Khan

wifistudy

1857 की क्रांति के नायक

मंदसौर Mandsour	फिरौज खाँ Firoz Khan
ग्वालियर Gwalior	तांत्या टोपे Tatya Tope
असम Assam	खंडपरेश्वरसिंह और मणिराम दत्त Khandpareshwar Singh and Maniram Dutta

1857 की क्रांति के नायक

उडीसा Odisha	सुरेंद्र शाही और उज्ज्वल शाही Surendra Shahi and Ujjwal Shahi
कुल्लु Kullu	राजा प्रतापसिंह Raja Pratap Singh
राजस्थान Rajasthan	ठाकुर कुशालसिंह, जयदयाल और हरदयाल Thakur Kushal Singh, Jaidayal and Hardayal

1857 की क्रांति के नायक

गौरखपुर Gorakhpur	गजधरसिंह Gajdhar Singh
मथुरा Mathura	सेवीसिंह और कदमसिंह Sevi Singh and Kadam Singh

wifistudy

1857 की क्रांति/REVOLT OF 1857

क्रांति की असफलता के कारण/CAUSES OF THE FAILURE OF THE REVOLUTION

1857 की क्रांति एक सीमित क्षेत्र में ही विस्तृत हो पाई। एक अनुमान के अनुसार कुल क्षेत्र का एक–चौथाई और कुल जनसंख्या के एक–दहाई भाग ने ही क्रांति में भाग लिया था।

The revolution of 1857 was expanded in a limited area. It is estimated that only one-fourth of the total area and one-tenth of the total population participated in the revolution.

1857 की क्रांति/REVOLT OF 1857

क्रांति की असफलता के कारण/CAUSES OF THE FAILURE OF THE REVOLUTION

योजना के अभाव के साथ केंद्रीय नेतृत्व की कमी। नेताओं में कॉलोनियल शासन की प्रकृति की पूर्ण समझ का अभाव था। न तो उनके पास भविष्य की कोई नीति थी और न हीं एक विचारधारा पर आधारित राजनीतिक परिप्रेक्ष्य और विकल्प।

Lack of central leadership with lack of planning. The leaders lacked a full understanding of the nature of colonial rule. He neither had any future policy nor an ideological political perspective and options.

क्रांति की असफलता के कारण/CAUSES OF THE FAILURE OF THE REVOLUTION

भारतीय समाज के सभी वर्गों का क्रांति में भागीदार न बनना। कई बड़े जमींदारों ने तो क्रांति के तूफान को रोकने का कार्य किया। कई लोगों ने तो क्रांति के विरुद्ध अंग्रेजों का साथ दिया। एक बड़ा शिक्षित व उभरता मध्यम वर्ग इसे पूर्वव्यापी और विगमनकारी कदम मानता था। उनके लिए ब्रिटिश शासन एक सुनहरे भविष्य की कुंजी था। उनका विश्वास था कि अंग्रेज भारत का आधुनिकीकरण करेंगे।

All sections of Indian society did not participate in the revolution. Many big landlords even acted as breakwater to storm. Many people supported the British against the revolution. A large educated and emerging middle class considered it to be a retrospective and discursive step. British rule was the key to a golden future for them. They believed that the British would modernize India.

wifistudy

1857 की क्रांति/REVOLT OF 1857

क्रांति की असफलता के कारण/CAUSES OF THE FAILURE OF THE REVOLUTION

भारतीय क्रांतिकारियों के पास आधुनिक हथियारों का पर्याप्त अभाव था। लगभग सभी लड़ाईयां परंपरागत हथियारों – तलवारों और भालों से लड़ी गई।

The Indian revolutionaries lacked sufficient modern weapons. Almost all the battles were fought with traditional weapons - swords and spears.

wifistudy

क्रांति की असफलता के कारण/CAUSES OF THE FAILURE OF THE REVOLUTION

तत्कालीन दौर में भारतीय आधुनिक राष्ट्रवाद से अपरिचित थे। टेलिग्राम आदि संचार साधनों ने अंग्रेजी सैन्य कमांडरों को क्रांतिकारियों की हर गतिविधियों से ख़बरदार रखा।

At that time, Indians were unfamiliar with modern nationalism. Communication tools such as telegrams kept the English military commanders alert to all activities of the revolutionaries.

1857 की क्रांति पर लिखा गया साहित्य/LITERATURE WRITTEN ON REVOLT OF 1857

- द इंडियन वॉर ऑफ़ इंडिपेंडेंस – वी.डी. सावरकर
- 1857: द्र ग्रेट रिबेलियन – अशोक मेहता
- द रफ़ बायोग्राफ़ी ऑफ़ द इंडियन म्यूटिनी – हेराल्ड ई. रफ़
- द इंडियन म्यूटिनी ऑफ़ 1857 – जी.बी. मालेसन
- The Indian War of Independence - V.D. Savarkar
- 1857: The Great Rebellion - Ashok Mehta
- The Rough Biography of the Indian Mutiny - Harald E. Rough
- The Indian Mutiny of 1857 - G.B. Maleson

1857 की क्रांति/REVOLT OF 1857

1857 की क्रांति पर लिखा गया साहित्य/LITERATURE WRITTEN ON REVOLT OF 1857

- कॉज़ेज़ द ऑफ़ इंडियन रिवॉल्ट – सर सैय्यद अहमद खाँ
- द सेपॉय म्यूटिनी एंड रिवॉल्ट ऑफ़ 1857 – आर.सी.मजूमदार
- 1857 (आधिकारिक साहित्य) – एस.एन. सेन
- सिविल रिबेलियन इन द इंडियन म्यूटिनीज़ (1857–1859) – एस. बी. चौधरी
- Causes of the Indian Revolt - Sir Syed Ahmed Khan
- The Sepoy Mutiny and Revolt of 1857 - RC Majumdar
- 1857 (Official literature) - S.N. Sen
- Civil Rebellion in the Indian Mutinyes (1857–1859) - S. B. Chaudhary

wifistudy

1857 की क्रांति/REVOLT OF 1857

1857 की क्रांति की प्रकृति पर प्रस्तुत विचार/NATURE OF THE REVOLT OF 1857

- जॉन लोरेंस एंड सिले – सैन्य विद्रोह (सेपोय म्यूटिनी)
- आर.सी. मजूमदार – न प्रथम, न राष्ट्रीय और न हीं स्वतंत्रता के लिए युद्ध (नीदर फ़र्स्ट, नॉर नेशनल एंड नॉर वॉर ऑफ़ इंडिपेंडेंस)
- एस.एन. सेन – धर्म के प्रश्न पर खड़ा हुआ आंदोलन शिघ्र ही स्वतंत्रता का आंदोलन बन गया।
- John Lorence & Sylé - Sepoy Mutiny
- R.C. Majumdar - Neither First nor National nor War for Independence
- S.N. Sen - The movement started with questioning religion became a movement of freedom soon.

1857 की क्रांति/REVOLT OF 1857

1857 की क्रांति की प्रकृति पर प्रस्तुत विचार/NATURE OF THE REVOLT OF 1857

- एल.ई.आर रीस – ईसाईयों के विरूद्ध धर्मांधियों का युद्ध (अ वॉर ऑफ़ फेनेटिक रिलिजियनिस्ट्स अगेंस्ट क्रिस्चियन्स)
- टी.आर. होल्म्स – बर्बरता का सभ्यता के विरूद्ध युद्ध (अ कन्फ्लिक्ट बिटविन सिविलाइजेशन एंड बार्बेरिएनिज़्म)

- LER Rees - A War of Phenatic Religionists Against Christians
- TR Holmes - A Conflict Between Civilization and Barbarianism

1857 की क्रांति/REVOLT OF 1857

1857 की क्रांति की प्रकृति पर प्रस्तुत विचार/NATURE OF THE REVOLT OF 1857

- ऑट्रम एंड टेलर – हिंदु परिवेदनाओं का उपयोग कर मोहम्मडनों द्वारा रचा गया षड़्यंत्र (अ मोहम्मडन कंस्पीरेसी मेकिंग यूज ऑफ़ हिंदु ग्रिवेंसेज़)
- जे. जी. मेडले – सर्वोच्च्ता के लिए जातीय संघर्ष (रेसियल स्ट्रगल फॉर सुप्रीमेसी)
- के. एम. पणीकर – राष्ट्रीय आंदोलन

- Autrum and Taylor - A Mohammedan Conspiracy Making Use of Hindu Grievances
- J. G. Medley - Racial Struggle for Supremacy
- K. M. Panikar - National Movement

wifistudy

1857 की क्रांति/REVOLT OF 1857

1857 की क्रांति की प्रकृति पर प्रस्तुत विचार/NATURE OF THE REVOLT OF 1857

- लाला लाजपतराय – एक राजनीतिक व राष्ट्रीय उदय का प्रयास (अ पॉलिटिकल एज वेल एज अ नेशनल अपराइजिंग)
- एस.सी. बॉस – राष्ट्रीय आंदोलन (नेशनल अपराईज़िंग)
- वी.डी. सावरकर – स्वतंत्रता का प्रथम युद्ध (फर्स्ट वॉर ऑफ़ इंडिपेंडेंस)

- Lala Lajpat Rai - A Political Age Well As a National Uprising
- SC Boss - National Uprising
- VD Savarkar – First War of Independence

1857 की क्रांति/REVOLT OF 1857

1857 की क्रांति की प्रकृति पर प्रस्तुत विचार/NATURE OF THE REVOLT OF 1857

- बेंजामिन डिजरैली – यह सैन्य विद्रोह है या राष्ट्रीय विद्रोह (इज़ इट अ म्यूटिनी ओर अ नेशनल रिवोल्ट)
- जी.बी. मालेसन – यह एक सैन्य विद्रोह के रूप में प्रारंभ हुआ और शिघ्र ही एक राष्ट्रीय विद्रोह बन गया।
- Benjamin Disraeli - Is It a Mutiny or a National Revolt
- GB Malesan - It started as a sepoy mutiny and quickly became a national uprising.

1857 की क्रांति/REVOLT OF 1857

1857 की क्रांति की प्रकृति पर प्रस्तुत विचार/NATURE OF THE REVOLT OF 1857

- एस. बी. चौधरी – स्वतंत्रता के कुछ निकट (समथिंग क्लोज टू इंडिपेंडेंस)
- पर्सिवल स्पियर – आधुनिक स्वंतंत्रता की ओर प्रथम प्रयास (फर्स्ट ऐस्से टूवार्ड्स मॉडर्न इंडिपेंडेंस)
- सर्वाधिक उपयुक्त कथन: ‘'ब्रिटिश हुकुमत को उखाड़ फेंकने के लिए भारतीयों द्वारा किया गया प्रथम महान प्रयास।'’
- S. B. Chaudhary - Something Close to Independence
- Percival Spear - First Essay Towards Modern Independence
- The most appropriate statement: "The first great effort by Indians to overthrow British rule."

1857 की क्रांति/REVOLT OF 1857

1857 की क्रांति की विशेषताएं और परिणाम/CHARACTERISTICS AND CONSEQUENCES

1857 की क्रांति में भारतीयों ने सांप्रदायिक सौहार्द और हिंदु–मुस्लिम एकता का परिचय दिया। अंग्रेज भारतीयों की इस ताकत से परिचित हो चुके थे अत: कालांतर में उनकी नीतियां सांप्रदायिकतावादी रही व उन्होनें भारतीय एकता के आदर्श को तोड़ने के भरसक प्रयास किए।

In the revolt of 1857, Indians introduced communal harmony and Hindu-Muslim unity. The British had become aware of this power of Indians, so over time their policies remained communalistic and they made every effort to break the ideal of Indian unity.

wifistudy

1857 की क्रांति/REVOLT OF 1857

1857 की क्रांति की विशेषताएं और परिणाम/CHARACTERISTICS AND CONSEQUENCES

इसने भारतीयों को 'एकतापूर्ण सामुहिक प्रयास' का महत्त्व बता दिया। इसी की कमी से 1857 का विद्रोह विफल रहा था। कालांतर में भारतीयों ने अपने राजनीतिक आदर्श बुने व उसकी प्राप्ति के लिए साथ आए। स्वतंत्रता आंदोलन के क्रांतिकारी दौर में 1857 के नेतृत्वकर्ताओं से प्रेरणा ग्रहण की।

This gave Indians the importance of 'unified group effort'. It was due to this that the Revolt of 1857 failed. Over time, Indians weaved their political ideals and came together to achieve it. They inspired by the leaders of 1857 in the revolutionary phase of independence.

wifistudy